अमृतवाणी संदेश



मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 101

दोहा:-

रामहि राम पुकारते, जिभ्या परि गव रोस।
सूधा जल पीवे नहीं,खोदि पिअनकी हौस।।

अर्थ:-

इस दोहे के माध्यम से कबीरदास जी उन लोगों पर कटाक्ष कर रहे हैं जो दिखावे की भक्ति में रमे रहते हैं। वे कहते हैं कि लोग 'राम-राम' रटते-रटते अपनी जीभ तक थका देते हैं, लेकिन उनके मन में ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम या सरलता नहीं होती। यह स्थिति वैसी ही है जैसे सामने बहते हुए **शुद्ध और सुलभ जल** को छोड़कर,अपनी प्यास बुझाने के लिए जबरन कुआँ खोदने का कठिन प्रयास करना। अर्थात, ईश्वर हमारे भीतर और अत्यंत सहजता से प्राप्त हैं, पर हम उन्हें बाहरी आडंबरों और जटिलताओं में खोजते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें अपने जीवन और व्यवहार में **सादगी और सहजता* अपनानी चाहिए। किसी भी काम को दिखावे के लिए करने के बजाय सच्चे मन से करना अधिक महत्वपूर्ण है। अक्सर हम सफलता पाने के लिए बहुत कठिन और घुमावदार रास्ते चुनते हैं, जबकि सच्चाई हमारे सामने और बहुत सरल होती है। इसलिए, हमेशा **दिखावे से दूर रहें** और जो अच्छाई आपके पास आसानी से उपलब्ध है, उसका सम्मान करना सीखें।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 102

दोहा:-

चिउँटी जहाँ न चढ़ि सकै, राई ना ठहराय।
आवागमन कि गम नहीं, तहँ सकलौजग जाय।।

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि परमात्मा का धाम या वह परम सत्य की अवस्था इतनी सूक्ष्म और अगम्य है जहाँ सामान्य सांसारिक बुद्धि (चींटी) नहीं पहुँच सकती और न ही वहाँ अहंकार (राई) का कोई अस्तित्व ठहर पाता है। उस स्थान पर जन्म-मरण या सांसारिक आवागमन की कोई पहुँच नहीं है, क्योंकि वह माया से परे है। फिर भी, जो लोग मन को एकाग्र कर मोह-माया को त्याग देते हैं, वे उस परम पद को प्राप्त कर लेते हैं और समस्त संसार अंततः उसी चेतना में लीन हो जाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि जीवन में उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मन की चंचलता और अहंकार को छोड़ना आवश्यक है। जिस प्रकार एक नन्हीं चींटी भी कड़ी मेहनत से ऊँचाइयों तक पहुँचती है, वैसे ही हमें भी धैर्य और सरलता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। हमें सिखाया जाता है कि दिखावा और घमंड करने वाला व्यक्ति कभी सत्य को नहीं समझ सकता; जो व्यक्ति सरल, शांत और एकाग्र होता है, वही जीवन की सच्ची सफलता और शांति प्राप्त करता है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 103

दोहा:-

कुल मर्यादा खोय के, खोजिन पद निरबान।
अंकुर बीज नसाय के, नर भये विदेही थान।।

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि जब मनुष्य अपने अहंकार और सामाजिक बंधनों (कुल की मर्यादा के अभिमान) को त्याग देता है, तभी उसे मोक्ष या 'निर्वाण' के पद की प्राप्ति होती है। जैसे बीज जब स्वयं को पूरी तरह मिटा देता है, तभी उसमें से नया अंकुर फूटता है, वैसे ही जब इंसान अपने 'स्वार्थ' और 'माया' रूपी बीज को नष्ट कर देता है, तब वह शरीर के मोह से मुक्त होकर 'विदेही' (परमात्मा के स्वरूप) को प्राप्त कर लेता है। सरल शब्दों में, स्वयं को मिटाकर ही परमात्मा को पाया जा सकता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों के लिए इस दोहे का संदेश यह है कि हमें कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। जिस तरह एक बीज मिट्टी में मिलकर खुद को छोटा बनाता है तभी वह एक बड़ा और फलदार पेड़ बन पाता है, उसी तरह हमें भी अपने स्वभाव में विनम्रता रखनी चाहिए। यदि हम अपनी जिद और "मैं सबसे अच्छा हूँ" जैसी भावनाओं को छोड़कर दूसरों की मदद करेंगे और अच्छी बातें सीखेंगे, तभी हम जीवन में महान बन पाएंगे। असली सफलता अहंकार को छोड़कर अच्छे संस्कार अपनाने में ही है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 104

दोहा:-

ते नर मरिके कहँ गये,जिन दीन्हों गुरु घोंटि।
रामनाम निजजानि के,छाड़हु बस्तू खोटि।।

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि वे लोग जीते-जी आध्यात्मिक रूप से मृत समान हैं जिन्होंने गुरु के ज्ञान को पूरी तरह आत्मसात नहीं किया या गुरु की शिक्षाओं की उपेक्षा की। मनुष्य को चाहिए कि वह सांसारिक मोह - माया जैसी 'खोटी' (व्यर्थ) वस्तुओं का त्याग कर दे। केवल राम-नाम (परमात्मा का स्मरण) ही वास्तविक सत्य और अपना निजी धन है, जिसे पहचान कर ही जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने शिक्षकों और बड़ों द्वारा दी गई अच्छी सीख को कभी नहीं भूलना चाहिए। जैसे हम कूड़े-कचरे को छोड़ कर काम की चीज़ें रखते हैं, वैसे ही हमें बुरी आदतों और झूठ का त्याग कर देना चाहिए। हमेशा सच्चाई और अच्छाई के रास्ते पर चलना ही सबसे बड़ी शक्ति है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 105

दोहा:-

बिजक बतावे वित्त को,जो वित गुप्ता होय।
वैसे शब्द बतावे जीवको,बूझे विरला कोय।।

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार *"बीजक"* (गुप्त धन का विवरण देने वाला पत्र) को देखकर छिपे हुए खजाने का पता चल जाता है, ठीक उसी प्रकार गुरु के शब्द मनुष्य के भीतर छिपे हुए आत्म-ज्ञान और परमात्मा का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह रहस्य अत्यंत गहरा है, जिसे कोई बिरला (साधना करने वाला विशिष्ट व्यक्ति) ही अपनी बुद्धि और विवेक से समझ पाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि असली ज्ञान केवल किताबों में नहीं, बल्कि हमारे व्यवहार और गुरु की शिक्षाओं में छिपा होता है। जैसे हर कोई छिपे हुए खजाने को नहीं ढूंढ सकता, वैसे ही बिना एकाग्रता और मेहनत के हम जीवन के सच्चे मूल्यों को नहीं समझ सकते। इसलिए, हमेशा अपने शिक्षकों की बातों को ध्यान से सुनें और अच्छी बातों को गहराई से समझने की कोशिश करें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 106

दोहा:-

यह संदेस फुर मानिके,लीन्हेउ सीस चढ़ाय।
संतो है संतोष सुख,रहहु सो हृदय जुड़ाय।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि ईश्वर या गुरु के इस संदेश को सत्य मानकर उसे पूरी श्रद्धा के साथ स्वीकार करना चाहिए। वे संतों (सज्जनों) को समझाते हैं कि जीवन में सबसे बड़ा सुख *"संतोष"* ही है। यदि मन में संतोष का भाव आ जाए, तो हृदय शीतल हो जाता है और मनुष्य सभी मानसिक विकारों व चिंताओं से मुक्त होकर शांति का अनुभव करता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपनी तुलना दूसरों से करने के बजाय जो हमारे पास है, उसी में खुश रहना सीखना चाहिए। लालच करने से मन हमेशा परेशान रहता है, जबकि ***संतोष (Satisfication)*** रखने से मन को सच्ची बहुत खुशी और शांति मिलती है। हमेशा याद रखें कि एक शांत और संतुष्ट मन ही सबसे बड़ा धन है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 107

दोहा:-

पानी पवन संजोयके, रचिया यह उत्पात।
सून्यहि सुरति समाय के,कासो कहिए जात।।

अर्थ:-

ईश्वर ने पानी और हवा (पंच तत्वों) के मेल से इस अद्भुत मानव शरीर और संसार की रचना की है, जो देखने में तो बहुत विशाल और चंचल लगता है, लेकिन अंत में यह सब नश्वर है। जब मनुष्य का ध्यान (सुरति) उस परम शून्य यानी परमात्मा में विलीन हो जाता है, तब उसे परम शांति और असीम आनंद की अनुभूति होती है। कबीर जी कहते हैं कि इस दिव्य और आत्मिक आनंद की स्थिति ऐसी है, जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता; भला इसे किसी दूसरे से कैसे कहा जाए?

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों! यह दोहा हमें सिखाता है कि हमारा यह जीवन और सुंदर शरीर प्रकृति का एक अनमोल उपहार है, इसलिए हमें इसका सम्मान करना चाहिए। हमें अपनी बाहरी चंचलता और दिखावे को छोड़कर अपने मन को शांत रखना सीखना चाहिए। जब हम शांत मन से पढ़ाई या कोई भी काम करते हैं, तो हमें जो सच्ची खुशी और सफलता मिलती है, वही हमारी असली ताकत होती है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश



अंक- 108

दोहा:-

संयोगे का गुणरबे, बिन जोगे गुण जाय।
जिभ्या स्वाद के कारणे,कीन्हे बहुत उपाय।।

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि अच्छी संगति (संयोग) से व्यक्ति के गुणों की प्रशंसा और वृद्धि होती है, जबकि कुसंगति या अपनों का साथ छूट जाने (बिन जोगे) से व्यक्ति के सद्गुण भी नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य इस संसार में केवल अपनी जीभ के स्वाद और भौतिक सुखों की लालसा के कारण भटकता रहता है और उन्हें पाने के लिए कई तरह के अनैतिक उपाय और प्रयास करता है, जिससे उसका पतन हो जाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अच्छे और संस्कारी मित्रों की संगति में रहना चाहिए, क्योंकि अच्छी संगति हमें महान बनाती है। इसके साथ ही,हमें अपनी जीभ के स्वाद (लालच) और बुरी आदतों पर नियंत्रण रखना चाहिए;क्योंकि क्षणिक सुख या लालच के वश में आकर किए गए गलत काम हमेशा हमारा नुकसान ही करते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

109

कबीरदास जी के दोहे

गुरुद्रोही औ मन मुखी,नारी पुरुष विचार।
ते नर चौरासी भ्रमै,जब लो ससि दिनकार।।

भावार्थ:-

इस दोहे में संत कबीर दास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने गुरु से द्रोह (विश्वासघात या अनादर) करता है, अपनी मनमानी (मन मुखी) करता है और श्रेष्ठ जीवन - मूल्यों को भूलकर केवल वासना या सांसारिक विकारों में डूबा रहता है, वह व्यक्ति इस संसार में बार-बार जन्म और मृत्यु के चक्र (चौरासी लाख योनियों) में भटकता रहता है। ऐसे अज्ञानी मनुष्यों का यह भटकाव तब तक समाप्त नहीं होता, जब तक इस ब्रह्मांड में सूर्य (दिनकार) और चंद्रमा (ससि) का अस्तित्व रहता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अपने शिक्षकों (गुरुओं) और बड़ों का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे हमें सही रास्ता दिखाते हैं। हमें अपनी मनमानी करने की बजाय अच्छे संस्कारों और अनुशासन का पालन करना चाहिए। जो बच्चे गुरु की सीख मानते हैं और गलत आदतों से दूर रहते हैं, वे जीवन में हमेशा सफल होते हैं, जबकि मनमानी करने वाले लोग हमेशा परेशानियों में घिरे रहते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

110

कबीरदास जी के दोहे

तेही हरि तेहि ठाकुरा, तेही हरि के दास।
ना यम भया न यामिनी, भामिनि चली निरास।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि जिसने अपनी आत्मा में उस परमेश्वर (हरि) को पहचान लिया है, वह स्वयं ईश्वर रूप हो जाता है और वही सच्चा हरि का दास है। जब जीवात्मा और परमात्मा का ऐसा मिलन हो जाता है, तो मनुष्य के भीतर से मृत्यु (यम) और अज्ञान रूपी रात (यामिनी) का डर हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। यहाँ तक कि सांसारिक मोह-माया या वासना (भामिनि) भी ऐसे ज्ञानी व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाती और निराश होकर लौट जाती है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि जब हम अपने मन में सच्चाई, अच्छाई और भगवान के प्रति सच्चा विश्वास रखते हैं, तो हमारे अंदर से हर तरह का डर गायब हो जाता है। यदि हम ईमानदारी के रास्ते पर चलेंगे, तो बुरी आदतें और गलत विचार (जैसे लालच या झूठ) हमें कभी भटका नहीं पाएंगे और हमसे दूर भाग जाएंगे। इसलिए हमेशा निडर होकर अच्छे काम करते रहें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

111

कबीरदास जी के दोहे

जात सवन कहँ देखिया, कहहिं कबीर पुकार।
चेतवा होय तो चेतले, दिवस परतु है चार।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी संसार की नश्वरता को देखकर सभी को सचेत करते हुए कहते हैं कि इस दुनिया में जो भी आया है (पैदा हुआ है), उसका नष्ट होना निश्चित है। यह मानव जीवन बहुत छोटा है, जैसे सिर्फ 'चार दिन' का समय हो। इसलिए समय रहते सावधान हो जाओ, मोह-माया से जागो और अपने जीवन के असली उद्देश्य को समझो। वक्त गँवाए बिना अच्छे कर्म कर लो, क्योंकि यह समय बहुत तेजी से बीत रहा है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि समय बहुत कीमती है और एक बार बीत जाने पर वापस नहीं आता। हमें आज का काम कल पर टालने के बजाय समय का सही उपयोग करना चाहिए। बचपन से ही अच्छे काम करने, दूसरों की मदद करने और अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने की आदत डालनी चाहिए ताकि हम अपने जीवन को सार्थक और सुंदर बना सकें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

112

कबीरदास जी के दोहे

मछरी मुख जस केचुआ,मुसवन मुंह गिरदान।
सर्पम मुख गहेजुआ,जात सभन की जान।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि जैसे केंचुए का मुंह मछली जैसा, गिरदान (एक प्रकार का चूहा या छिपकली जैसा जीव) का मुंह चूहे जैसा और गहेजुआ (ददुआ/कनखजूरा) का मुंह सांप जैसा दिखता है, फिर भी वे वो जीव नहीं बन जाते। रूप-रंग या चेहरा भले ही किसी और से मिलता-जुलता हो,लेकिन उनके गुण और स्वभाव से उनकी असली पहचान (जात) तुरंत पता चल जाती है। बाहरी दिखावे से किसी की असलियत नहीं बदलती।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी दिखावा नहीं करना चाहिए और न ही किसी के बाहरी रूप को देखकर धोखा खाना चाहिए। आप जैसे हैं, वैसे ही सच्चे और ईमानदार बने रहें, क्योंकि हमारा व्यवहार और हमारी आदतें ही दुनिया के सामने हमारी असली पहचान लाती हैं। नकली रूप या दिखावा ज्यादा दिनों तक नहीं छुप सकता, इसलिए क्षहमेशा अपनी अच्छाई और सच्चाई पर भरोसा रखें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

113

कबीरदास जी के दोहे

मच्छरूप माया भई, यमरा खेल अहेर।
हरि हर ब्रह्म न ऊबरे, सुर - नर मुनि केहि केर।।

भावार्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि यह सांसारिक माया एक मछुआरे का रूप धारण करके बैठी है और यमराज (मृत्यु/काल) एक शिकारी की तरह खेल रच रहा है। इस संसार रूपी जाल में फँसने से स्वयं हरि (विष्णु), हर (शिव) और ब्रह्मा जैसी महान शक्तियाँ भी नहीं बच पाईं, तो फिर साधारण देवताओं, मनुष्यों और ऋषि-मुनियों की क्या बिसात है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस संसार में जो भी आया है, वह मोह-माया के प्रभाव और मृत्यु के नियम से अछूता नहीं रह सकता; सबको एक न एक दिन काल का ग्रास बनना ही पड़ता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें लालच और बुरी आदतों के जाल में नहीं फँसना चाहिए। जैसे मछली थोड़े से भोजन के लालच में मछुआरे के कांटे में फँस जाती है, वैसे ही गलत चीजें हमें अपनी ओर आकर्षित करती हैं, लेकिन उनका परिणाम हमेशा बुरा होता है। इसलिए हमें हमेशा सही राह पर चलना चाहिए,बड़ों की सीख माननी चाहिए और किसी भी तरह के झूठे दिखावे या लालच में आकर अपना नुकसान नहीं करना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

114

कबीरदास जी के दोहे

ई माया जग मोहनी, मोहिस सब जग झार।
हरिश्चंद्र सत कारने, घर घर गए बिकाय।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि यह मायावी संसार बहुत आकर्षक है, जिसने अपने जाल में पूरी दुनिया को फंसा रखा है। लोग अक्सर लालच और मोह में आकर अपने अच्छे संस्कार भूल जाते हैं। लेकिन राजा हरिश्चंद्र जैसे महान व्यक्ति भी हुए हैं,जिन्होंने इस मोह-माया का त्याग कर दिया। उन्होंने सत्य के मार्ग पर चलने के लिए अपनी धन-दौलत, महल यहाँ तक कि खुद को भी बेच दिया, पर कभी झूठ का सहारा नहीं लिया।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी लालच, घमंड या किसी गलत चीज के आकर्षण में नहीं पड़ना चाहिए। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, हमें हमेशा राजा हरिश्चंद्र की तरह सच्चाई और ईमानदारी का रास्ता चुनना चाहिए। सत्य की राह पर चलने में शुरू में मुश्किलें आ सकती हैं, लेकिन अंत में जीत हमेशा सच्चाई और अच्छे संस्कारों की ही होती है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

115

कबीरदास जी के दोहे

सेख अकरदी सेख सकरदी,मानहु बचन हमार।
आदि अंत औ युगहि युग,देखहु दृष्टि पसार।।

भावार्थ:-

प्रस्तुत दोहे में कवि (संत कबीर दास जी काल के संदर्भ में) ईश्वर या सत्य की शाश्वतता का वर्णन कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हे मानव! तुम हमारे वचनों को मानो और विश्वास करो। यदि तुम अपनी ज्ञान की दृष्टि फैलाकर देखोगे, तो पाओगे कि वह परम तत्व सृष्टि के आदि (शुरुआत), अंत और युगों-युगों से हमेशा विद्यमान रहा है। संसार की हर चीज़ बदल सकती है या नष्ट हो सकती है, लेकिन सत्य और परमात्मा का अस्तित्व हर काल में एक समान स्थिर रहता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा उस 'सत्य' और 'अच्छाई' का साथ देना चाहिए जो कभी नहीं बदलती। जैसे समय बदलने पर भी सही मूल्य (जैसे ईमानदारी, दया और बड़ों का आदर) हमेशा सही ही रहते हैं,वैसे ही हमें भी परिस्थितियों के प्रभाव में आकर अपनी अच्छाई को छोड़ना नहीं चाहिए। यह संदेश बच्चों को जीवन में अडिग रहना और सदाचार के मार्ग पर चलना सिखाता है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

116

कबीरदास जी के दोहे

दिन को रोजा रहत है, रात हनत है गाय।
येहि खून वह बंदगी, क्योंकर खुसी खोदाय।।

भावार्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि जो लोग दिन में तो उपवास (रोजा) रखते हैं और ईश्वर की इबादत का नाटक करते हैं, लेकिन रात होते ही जीवों की हत्या करके मांस (गाय) खाते हैं, उनकी यह भक्ति व्यर्थ है। एक तरफ जीवों पर अत्याचार करना (खून करना) और दूसरी तरफ ईश्वर की बंदगी करना-ये दोनों बातें एक साथ कैसे चल सकती हैं? ऐसी दिखावे की इबादत से भला भगवान (खुदा) कैसे खुश हो सकते हैं। सच्ची भक्ति मन की पवित्रता और दया भाव में है, दिखावे में नहीं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी दिखावा या ढोंग नहीं करना चाहिए। हमारे मन और काम में ईमानदारी होनी चाहिए। अगर हम दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं या जीवों के प्रति निर्दयी हैं, तो भगवान हमसे कभी खुश नहीं होंगे। सच्ची इंसानियत और ईश्वर की असली पूजा यही है कि हम सभी जीवों से प्यार करें, किसी को दुःख न पहुँचाएँ और हमेशा दयालु बने रहें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

117

कबीरदास जी के दोहे

नारि रचंते पुरुष हैं, पुरुष रचंते नारि।
पुरुषहि पुरुषा जो रचे,सो विरले संसार।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि सृष्टि के स्वाभाविक नियम के अनुसार स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं और मिलकर समाज का निर्माण (रचना) करते हैं। लेकिन जो पुरुष (ज्ञानी व्यक्ति) किसी अन्य पुरुष को 'वास्तविक पुरुष' यानी एक श्रेष्ठ, चरित्रवान और सद्गुणी इंसान के रूप में गढ़ता है, ऐसे गुरु या मार्गदर्शक इस संसार में बहुत दुर्लभ (विरले) होते हैं। यह दोहा इंसानी जीवन में एक अच्छे गुरु, सच्चे मित्र और सही मार्गदर्शन के महत्व को दर्शाता है, जो किसी के चरित्र को महान बना दे।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा ऐसे अच्छे दोस्तों और गुरुओं का साथ चुनना चाहिए जो हमें एक बेहतर इंसान बनने में मदद करें। जिस तरह एक अच्छा मूर्तिकार पत्थर को तराशकर सुंदर मूर्ति बना देता है, वैसे ही हमारे अच्छे संस्कार और अच्छी संगति हमारे जीवन को सुंदर बनाती है। हमें भी दूसरों की कमियाँ निकालने के बजाय, उन्हें अच्छी बातें सिखानी चाहिए और खुद भी एक सच्चा और नेक इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

118

कबीरदास जी के दोहे

तन राता मन जात है, मनराता तन जाय।
तन मन एकै होए रहै, तब हंस कबीर कहाय।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मनुष्य का केवल शरीर प्रभु की भक्ति में रंगा रहता है, तब तक उसका चंचल मन सांसारिक वासनाओं और बुराइयों में भटकता रहता है। और जब केवल मन अच्छे विचारों में रंगा होता है, तब शरीर आलस्य और गलत कार्यों की ओर खिंचा चला जाता है। वास्तविक आध्यात्मिक प्रगति तब होती है, जब मनुष्य का तन और मन दोनों पूरी तरह से एक होकर ईश्वर की भक्ति और सत्कर्मों में लीन हो जाते हैं। ऐसी पूर्ण एकता और पवित्रता की स्थिति को प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही कबीर की दृष्टि में सच्चा, निष्कपट और सिद्ध पुरुष (हंस) कहलाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें अपनी कथनी और करनी को हमेशा एक जैसा रखना चाहिए। यदि हम बाहर से अच्छे और संस्कारी दिखने का नाटक करें, लेकिन हमारे मन में दूसरों के प्रति बुरे विचार या बेईमानी हो, तो हम कभी सच्चे इंसान नहीं बन सकते। सच्ची सफलता और अच्छाई तभी मिलती है जब हम अपने शरीर के साथ-साथ अपने मन को भी साफ, ईमानदार और अनुशासित रखें। इसलिए, हमें हमेशा मन, वचन और कर्म से एक जैसा सच्चा और नेक बनना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

119

कबीरदास जी के दोहे

कहहिं कबीर पुकारि कै, सबका उहै विचार।
कहा हमार मानै नहीं, किमि छूटै भ्रमजार।।

भावार्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी बड़े दुखी मन से पुकारते हुए कहते हैं कि दुनिया के सभी ज्ञानी और संतों का एक ही विचार (मत) है कि इस संसार का परम सत्य क्या है। लेकिन यह जानते हुए भी लोग अहंकार, लोभ और अज्ञानता के वश में होकर मेरी (या संतों की) सही और सच्ची बातों को नहीं मानते हैं। कबीर जी चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जब लोग सत्य के मार्ग पर चलने को तैयार ही नहीं हैं, तो वे इस संसार के मोह-माया और भ्रम के जाल (भ्रमजाल) से कैसे मुक्त हो पाएंगे अर्थात वे जीवन भर इसी भटकाव में फंसे रह जाएंगे।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अपने माता-पिता, शिक्षकों और बड़ों की अच्छी व सच्ची बातों को मानना चाहिए। कई बार हम अपनी नासमझी या जिद के कारण सही सलाह को अनदेखा कर देते हैं और बाद में गलतियों के जाल में फंस जाते हैं। यह दोह हमें सिखाता है कि अच्छे रास्ते पर चलने के लिए अनुशासन और बड़ों के मार्गदर्शन का सम्मान करना बहुत जरूरी है, ताकि हम किसी भी तरह के भ्रम या गलत संगति से बच सकें और जीवन में सही फैसले ले सकें।

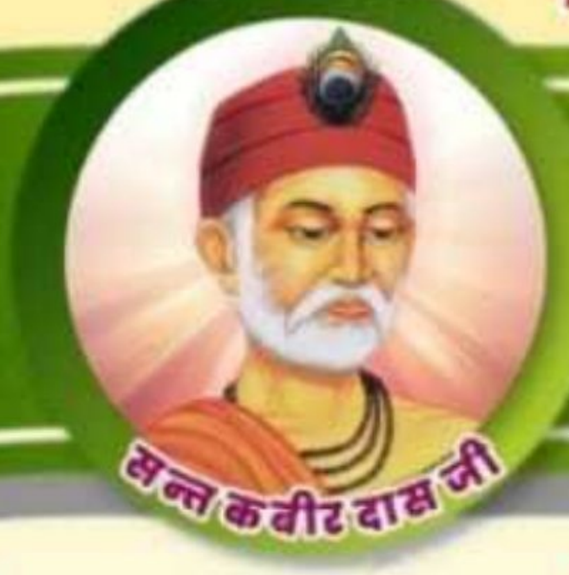
टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

120

कबीरदास जी के दोहे

तीन लोक मुवाबउ आयके, छूटी न काहु कि आस।
एक अँधेरे जग खाइया, सब का भया निपात।।

भावार्थ:-

संत कबीर दास जी कहते हैं कि संसार के तीनों लोकों (आकाश, पाताल और मृत्युलोक) के प्राणी यहाँ आकर मोह-माया के जाल में फंस जाते हैं और किसी की भी सांसारिक इच्छाएँ (आस) कभी पूरी नहीं होतीं। इस अज्ञान रूपी गहरे अंधकार ने पूरे संसार को अपने वश में कर रखा है, जिसके कारण सभी का आध्यात्मिक पतन (विनाश) हो रहा है। लोग जीवन के सच्चे उद्देश्य को भूलकर केवल माया के पीछे भागते रहते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें लालच और कभी न खत्म होने वाली इच्छाओं के पीछे नहीं भागना चाहिए। सच्ची खुशी बाहरी चीजों या खिलौनों को बटोरने में नहीं, बल्कि जो हमारे पास है उसमें संतुष्ट रहने और अच्छे कर्म करने में है। अज्ञानता और बुराई के अंधकार से दूर रहकर हमेशा ज्ञान, अच्छाई और दूसरों की मदद का रास्ता चुनना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

121

कबीरदास जी के दोहे

नाथ मुछंदर बांचे नहीं, गोरख दत्ता व्यास।
कहहिं कबीर पुकार के,सब परे काल के फांस।।

भावार्थ:-

संत कबीर दास जी इस दोहे के माध्यम से संसार की नश्वरता (संसार का अंत होना) और परम सत्य को प्रकट करते हैं। वे कहते हैं कि चाहे सिद्ध पुरुष और योगी नाथ मछिंद्रनाथ हों, गोरखनाथ हों, भगवान दत्तात्रेय हों या फिर महान ग्रंथ महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ही क्यों न हों-इस पृथ्वी पर जिसने भी जन्म लिया है, उसे एक न एक दिन जाना ही पड़ता है। कबीर जी जोर देकर कहते हैं कि मृत्यु के इस नियम से कोई नहीं बच सकता; चाहे कोई कितना भी बड़ा ज्ञानी, संन्यासी या महापुरुष क्यों न हो, सभी को एक दिन 'काल' यानी समय के चक्र (मृत्यु के जाल) में बंधना ही पड़ता है। इसलिए इस नश्वर शरीर और झूठे अहंकार पर घमंड करने के बजाय मनुष्य को सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि समय सबसे बलवान है और इस दुनिया में कोई भी चीज हमेशा के लिए नहीं रहती। हमें अपने रूप, धन या किसी भी बात का घमंड (अहंकार) नहीं करना चाहिए, क्योंकि समय के साथ सब कुछ बदल जाता है। जब हमारा जीवन सीमित है, तो हमें मिले हुए समय का सही उपयोग करना चाहिए - दूसरों की मदद करनी चाहिए, हमेशा सच बोलना चाहिए और अच्छे काम करने चाहिए ताकि हमारे जाने के बाद भी लोग हमें हमारे अच्छे व्यवहार के लिए याद रखें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

122

कबीरदास जी के दोहे

अपनी अपनी करि गए, लागि न काहु के साथ।
अपनी करि गये रावणा, अपनी दशरथ नाथ।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि इस संसार में आकर हर व्यक्ति को अपने ही कर्मों का फल भुगतना पड़ता है; अंत समय में किसी के धन, दौलत या सगे-संबंधी साथ नहीं जाते। महान प्रतापी राजा रावण और चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ भी इस धरती पर आए,उन्होंने अपने-अपने ढंग से कर्म किए और अंत में खाली हाथ चले गए। मनुष्य के साथ केवल उसके द्वारा किए गए अच्छे या बुरे कर्म ही जाते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अच्छे और भलाई के काम करने चाहिए। जब हम दूसरों की मदद करते हैं,सच बोलते हैं और ईमानदारी से रहते हैं, तो वही हमारे सबसे अच्छे और सच्चे साथी बनते हैं। नाम और शोहरत से ज्यादा हमारे अच्छे कर्म मायने रखते हैं, क्योंकि वही हमारी असली पहचान बनते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

123

कबीरदास जी के दोहे

खग खोजन के तुम परे,पाछे अगम अपार।
बिन परिचय कस जानिहौ, झूठा है हंकार।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि मनुष्य ईश्वर या सत्य को बाहर खोजने के लिए भटकता रहता है, जबकि वह असीम और अनंत सत्ता स्वयं उसके भीतर ही छिपी है। जब तक व्यक्ति आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं करता और खुद को नहीं पहचानता, तब तक उसका बाहरी दिखावा और घमंड पूरी तरह से व्यर्थ और झूठा है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें दूसरों में कमियाँ ढूंढने या बाहर की चीज़ों पर घमंड करने के बजाय सबसे पहले खुद को सुधारना चाहिए। अपनी गलतियों को पहचानना और घमंड न करना ही सच्ची समझदारी है। हमेशा शांत और विनम्र रहकर अपने व्यवहार को अच्छा बनाने का प्रयास करें।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

124

कबीरदास जी के दोहे

साधु संत तेरी जना, जिन मानल बचन हमार।
आदि अंत उत्पत्ति प्रलय, देखहु दृष्टि पसार ।।

भावार्थ:-

इस साखी में संत कबीरदास जी कहते हैं कि वे लोग ही सच्चे साधु या संत हैं जिन्होंने गुरु या ईश्वर के वचनों को अपने जीवन में सत्य मानकर अपनाया है। ऐसे तत्वदर्शी पुरुष अपनी ज्ञानरूपी दृष्टि को फैलाकर संसार के आदि (शुरुआत), अंत, सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय के शाश्वत नियम को साक्षात देख और समझ लेते हैं। वे संसार की नश्वरता को जानकर मोह-माया से मुक्त हो जाते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

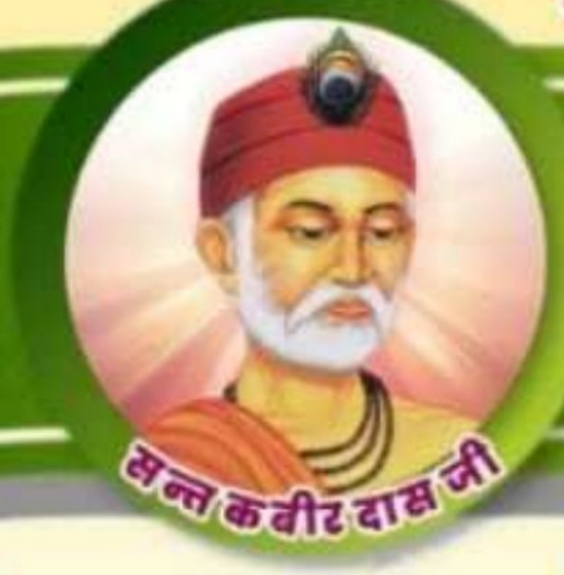
इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अपने माता-पिता, गुरुजनों और अच्छे लोगों की सही बातों (वचनों) को ध्यान से सुनना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए। जो बच्चे बड़ों की अच्छी सीख को मानते हैं, वे जीवन में सही और गलत का अंतर समझ पाते हैं। यह संदेश हमें अनुशासन में रहने, सत्य का साथ देने और हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

125

कबीरदास जी के दोहे

पाहन होके सब गए,बिनु भितियन को चित्त।
जासो कियौ मिताइया ,सो धन भया न हित्त।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि संसार के लोग पत्थरों की तरह भावनाहीन हो चुके हैं और उनके दिल बिना दीवारों वाले उस सूने घर की तरह हैं जिसमें कोई चित्र या रंग नहीं होता। कवि कहते हैं कि उन्होंने जिस व्यक्ति को अपना सबसे प्यारा मित्र माना और जिस पर भरोसा किया, वह व्यक्ति संकट के समय न तो सच्चा धन (सच्चा साथी) साबित हुआ और न ही उसने कोई भलाई या हित किया।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा सच्चा और अच्छा इंसान बनना चाहिए, दूसरों के प्रति अपने दिल में दया और प्यार रखना चाहिए। हमें किसी के साथ केवल स्वार्थ के लिए दोस्ती नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपने मित्रों का हर सुख-दुख में पूरी ईमानदारी से साथ निभाना चाहिए ताकि हम किसी के लिए एक सच्चे और भरोसेमंद साथी बन सकें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

126

कबीरदास जी के दोहे

झूठ झूठके छाड़हू, मिथ्या यह संसार।
तेहि कारण मैं कहत हौं,जाते होय उबार।।

भावार्थ:-

संत कबीरदास जी कहते हैं कि यह संसार नश्वर और मिथ्या (क्षणिक) है, इसलिए यहाँ के झूठे मोह-माया और असत्य का त्याग कर दो। वे समझाते हैं कि मैं तुम्हें इसी कारण से सचेत कर रहा हूँ और सत्य का मार्ग दिखा रहा हूँ, जिससे तुम्हारा इस संसार के बंधनों से कल्याण और उद्धार हो सके।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा झूठ और दिखावे से दूर रहना चाहिए। अपने जीवन में हमेशा सच्चाई और ईमानदारी का रास्ता अपनाना चाहिए, क्योंकि सच्चे रास्ते पर चलकर ही हम एक अच्छे इंसान बन सकते हैं और जीवन में सच्ची सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

127

कबीरदास जी के दोहे

गुनातीत के गावते, आपुहि गये गँवाय।
माटी तन माटी मिल्यो,पवनहिं पवन समाय।।

भावार्थ:-

इस दोहे का अर्थ है कि जो लोग उस निराकार, ईश्वर या परम तत्व (जो गुणों से परे है) की महिमा गाते हैं, वे अंततः अहंकार को छोड़कर उसी परमात्मा में लीन हो जाते हैं। मृत्यु के पश्चात यह नश्वर शरीर पंचतत्वों में विलीन हो जाता है-मिट्टी से बना यह शरीर मिट्टी में मिल जाता है और भीतर की सांस (प्राण) हवा में समा जाती है। अर्थात,आत्मा का परमात्मा से मिलन ही अंतिम सत्य है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमारा यह जीवन हमेशा रहने वाला नहीं है, इसलिए हमें कभी भी अपने रूप, रंग या पैसों पर घमंड (अहंकार) नहीं करना चाहिए। हमें सभी के साथ प्यार और विनम्रता से रहना चाहिए क्योंकि अंत में इंसान के अच्छे कर्म और उसका स्वभाव ही याद रखे जाते हैं, बाहरी चमक-दमक नहीं।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

128

कबीरदास जी के दोहे

नाना नाच नचाय के, नाचे नट के भेष।
घट घट अविनासी बसै,सुनहु तकी तुम सेष।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि यह ईश्वर या परमसत्ता दुनिया में अनेक प्रकार के रूप और स्वांग (नट का भेष) बदलकर तरह-तरह के नाच नचाती है, यानी संपूर्ण जगत् की लीला वही रचा रही है। हे संत (तकी और शेष)! ध्यान से सुनो, वह अविनाशी परमात्मा किसी एक स्थान पर नहीं, बल्कि संसार के प्रत्येक कण और हर जीव के हृदय में निवास करता है। ईश्वर को बाहर खोजने के बजाय अपने भीतर अनुभव करने की आवश्यकता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि दुनिया का हर इंसान और जीव ईश्वर का ही रूप है। इसलिए हमें किसी के साथ भेद - भाव नहीं करना चाहिए और सभी के साथ दया, प्रेम तथा सम्मान का व्यवहार करना चाहिए। जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो एक तरह से हम ईश्वर की ही सेवा कर रहे होते हैं।

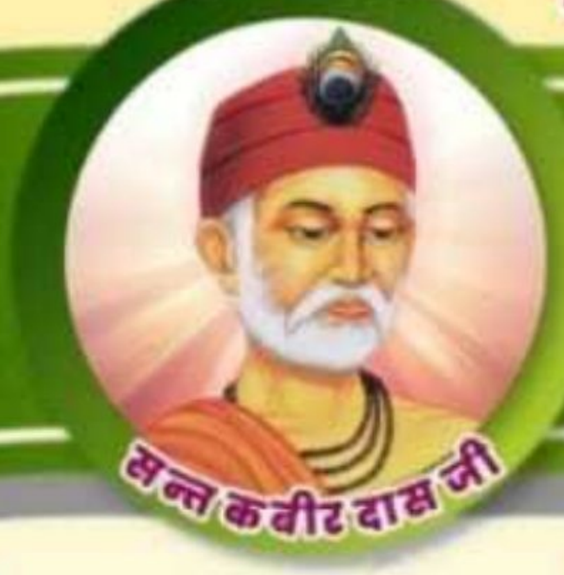
टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

129

कबीरदास जी के दोहे

पढ़िगै फाँसो काल की,करहु आपनो सोच।
संत निकटही संत जा, मिल रहे पोचै पोच।।

भावार्थ:-

इस साखी का अर्थ है कि मनुष्य पर हर क्षण मृत्यु (काल) का जाल मँडरा रहा है, इसलिए उसे अपने भविष्य और आत्म-कल्याण के बारे में समय रहते विचार कर लेना चाहिए। दुनिया की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि संत या ज्ञानी पुरुष तो एक-दूसरे को पहचानकर पास आ जाते हैं, लेकिन मूर्ख और दुष्ट लोग भी हमेशा अपने जैसे नीच और दुष्ट लोगों से ही जाकर मिलते हैं और सत्य को अनदेखा कर देते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस साखी से हमें यह सीख मिलती है कि समय बहुत कीमती है और हमें इसका सही इस्तेमाल करना चाहिए। हमेशा अच्छे, सच्चे और ज्ञानी लोगों की संगति में रहें, क्योंकि गलत दोस्तों के साथ रहने से हम सही मार्ग से भटक सकते हैं। अपनी भूलों के बारे में खुद सोचें और जीवन में हमेशा संतों और अच्छे लोगों के पद-चिह्नों पर चलकर अच्छाई का चुनाव करें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

130

कबीरदास जी के दोहे

अंध भया सब डोलई, कोई न करै विचार।
कहा हमार माने नहीं, किमि छूटे भ्रमजार।।

भावार्थ:-

इस साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि संसार के लोग अज्ञानता के कारण अंधे होकर बिना सोचे-समझे इधर-उधर भटक रहे हैं और अपनी भलाई का विचार नहीं करते। वे ज्ञानी संतों और गुरुओं की सच्ची बातों पर ध्यान नहीं देते। ऐसे में वे जीवन में फैले मोह - माया और भ्रम के जाल से कैसे मुक्त हो पाएंगे।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

हमें बिना सोचे - समझे दूसरों की देखा-देखी या गलत राह पर नहीं चलना चाहिए। जब हमारे बड़े, माता-पिता या शिक्षक हमें सही रास्ता दिखाते हैं, तो हमें उनकी बातों को ध्यान से सुनना और मानना चाहिए। बुद्धि और सही ज्ञान के प्रयोग से ही हम जीवन की उलझनों और गलतफहमियों से बचकर सही दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

131

कबीरदास जी के दोहे

दिया नखत तन कीन्ह पयाना, मंदिर भया उजार।
मरिगा सो तो मरि गया, बाँचे बाचन हार।।

भावार्थ:-

इस दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि जब शरीर रूपी यह ढांचा आत्मा से अलग होकर नष्ट होता है, तो मानव रूपी मंदिर पूरी तरह उजड़ (सूना हो) जाता है। जो चला गया, वह तो सदा के लिए चला जाता है, लेकिन पीछे बचे हुए लोग उनके जाने पर केवल शोक और रोना - धोना करते रह जाते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

बच्चों! यह दोहा हमें सिखाता है कि यह जीवन और हमारा शरीर हमेशा रहने वाला नहीं है, इसलिए हमें अपने जीवन के एक-एक पल का सही उपयोग करना चाहिए। रोने या दुखी होने में समय गंवाने के बजाय, हमें जीवित रहते हुए अच्छे कर्म करने चाहिए और दूसरों की मदद करनी चाहिए, ताकि हमारे जाने के बाद भी लोग हमें हमारी अच्छी बातों के लिए याद रखें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

132

कबीरदास जी के दोहे

लख चौरासी जीव जन्तु में, भटकि भटकि दुख पाव।
कहे कबीर जो रामहि जाने, सो मोहि नीके भाव।।

भावार्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि जीवात्मा चौरासी लाख योनियों (विभिन्न जीव-जंतुओं के रूपों) में भटकते हुए अनेक प्रकार के कष्ट और दुख भोगती है। इस सांसारिक आवागमन और दुखों के चक्र से मुक्ति पाना ही जीवन का मूल लक्ष्य है। कबीर जी के अनुसार, जो व्यक्ति ईश्वर (राम) के सच्चे स्वरूप को जान लेता है और भक्ति मार्ग पर चलता है, वही उन्हें सबसे प्रिय लगता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह शिक्षा मिलती है कि हमारा जीवन बहुत अनमोल है, इसलिए हमें इसे व्यर्थ की आदतों या बुराइयों में नष्ट नहीं करना चाहिए। हमें सभी जीव-जंतुओं के प्रति दया, प्रेम और करुणा का भाव रखना चाहिए। हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए और ईश्वर पर विश्वास रखते हुए सच्चाई व ईमानदारी के रास्ते पर चलना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

133

कबीरदास जी के दोहे

तिय सुंदरी न सोहई, सनकादिक के साथ।
कबहुँक दाग लगावई, कारी हाँडी हाथ।।

भावार्थ:-

यह दोहा संगति के प्रभाव और मर्यादा के महत्त्व को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि जिस प्रकार एक अत्यंत सुंदर स्त्री ज्ञानी संन्यासियों (सनकादिक मुनियों) की मंडली में शोभा नहीं देती, उसी प्रकार किसी अनुपयुक्त या गलत स्थान पर जाने से चरित्र पर दाग लगने का भय रहता है। ठीक वैसे ही जैसे काली हंडी को हाथ लगाने पर व्यक्ति का हाथ चाहे कितना भी साफ क्यों न हो, उस पर कालिमा या दाग लग ही जाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अपनी संगति और वातावरण का ध्यान रखना चाहिए। गलत संगति या बुरी आदतों वाले लोगों के साथ रहने पर न चाहते हुए भी हमारी छवि और चरित्र पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए हमेशा अच्छे, ज्ञानी और सच्चे दोस्तों का साथ चुनना चाहिए ताकि हमारा जीवन भी उज्ज्वल और निष्कलंक बने।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

134

कबीरदास जी के दोहे

अपनी जाँघ उघारिके के,अपनी कही न जाय।
किंचित जाने आपना, की मेरा जन गाय।।

भावार्थ:-

यह दोहा लोक-व्यवहार की एक महत्वपूर्ण सीख देता है कि व्यक्ति को अपने घर, परिवार या अपनी निजी कमजोरियों और रहस्यों को दूसरों के सामने उजागर नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार अपनी जांघ खोलकर दिखाने में अपनी ही लज्जा जाती है, उसी प्रकार अपने घर का भेद दूसरों को बताने से अपनी ही हँसाई और बदनामी होती है। जब हम अपनी निजी बातें दूसरों को बताते हैं, तो वे हमारी बेबसी का मज़ा लेते हैं या उसे गा-गाकर सर्वत्र फैला देते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस सीख से हमें यह समझना चाहिए कि हमें अपने घर की बातें, आपस के झगड़े या अपनी कमजोरियाँ बाहर के लोगों या दोस्तों के सामने बोलकर उनका मज़ाक नहीं बनने देना चाहिए। यदि आपस में कोई समस्या हो, तो उसे घर के बड़ों या अपने माता-पिता के साथ ही साझा करना चाहिए। अपने परिवार का मान बनाए रखना और गोपनीयता का ध्यान रखना एक अच्छी और समझदारी भरी आदत है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

135

कबीरदास जी के दोहे

मर्मक बाघलई जगत, कोई न करै विचार।
हरि की भक्ति जाने बिना,भव बूढ़ि मुवा संसार।।

भावार्थ:-

यह संसार नाशवान है और मोह-माया में उलझा हुआ है, लेकिन फिर भी लोग इस सच्चाई पर विचार नहीं करते। ईश्वर की सच्ची भक्ति और परम तत्व को जाने बिना लोग संसार की व्यर्थ की चीज़ों में ही उलझे रहते हैं और अंततः इस जन्म-मरण के भवसागर में डूबकर अपना जीवन नष्ट कर लेते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें जीवन में बाहरी दिखावे और भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे भागने के बजाय अच्छी सोच, सच्चाई और ईश्वर के स्मरण को महत्त्व देना चाहिए। जब हम अपने कर्मों में अच्छाई और प्रभु की भक्ति को शामिल करते हैं, तभी हमारा जीवन सही अर्थों में सफल बनता है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

136

कबीरदास जी के दोहे

कहैं कबीर पुकारि के, बै पंथै मत भूल।
जेहि राखेउ अनुमान करि, सो थूल नहीं अस्थूल।।

भावार्थ:-

संत कबीरदास जी पुकार-पुकार कर कहते हैं कि बाहरी आडंबरों और गलत रास्तों में भ्रमित मत हो। ईश्वर को तुम जैसा आकार या रूप मानकर पूज रहे हो, वह केवल एक अनुमान मात्र है। वास्तव में वह परम तत्व किसी स्थूल (भौतिक शरीर/मूर्ति) या सूक्ष्म सीमा में नहीं बंधा है, बल्कि वह तो सर्वव्यापी, निराकार और इस सृष्टि के हर कण में समाया हुआ है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस साखी से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें ईश्वर को सिर्फ मंदिरों या मूर्तियों में ढूँढने के बजाय हर इंसान और जीव-जंतु में उनका रूप देखना चाहिए। सच्चे मन से अच्छाई के रास्ते पर चलना, सभी से प्रेम करना और दिखावे से दूर रहकर दूसरों की मदद करना ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

137

कबीरदास जी के दोहे

राम नाम अतिदुर्लभा,औरे ते नहिं काम।
आदि अंत औ युगहि युग,रामहिं ते संग्राम।।

भावार्थ:-

इस दोहे में श्री राम के नाम की महिमा और श्रेष्ठता को दर्शाया गया है। ईश्वर का 'राम' नाम अत्यंत दुर्लभ और अनमोल है, जिसके आगे संसार के अन्य सभी साधन या इच्छाएँ व्यर्थ और निरर्थक प्रतीत होती हैं। सृष्टि के प्रारंभ से लेकर अंत तक और प्रत्येक युग में, व्यक्ति को अपने भीतर के विकारों, बुराइयों तथा सांसारिक कठिनाइयों से विजय पाने के लिए केवल राम नाम के संबल की ही आवश्यकता होती है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि सत्य, अच्छाई और ईश्वर का नाम ही जीवन का सबसे सच्चा सहारा है। जैसे जीवन में कठिनाइयों और गलत आदतों से लड़ने के लिए हमें हिम्मत की जरूरत होती है, वैसे ही अच्छी बातें और प्रभु का नाम हमारे मन को शक्ति देते हैं। इसलिए हमेशा सत्य के मार्ग पर चलें और कठिन समय में घबराएं नहीं, क्योंकि अच्छाई की ताकत हर युग में बुराई पर जीत दिलाती है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

138

कबीरदास जी के दोहे

अपरमपार रूप बहुरंगी, रूप निरूपनताहि।
बहुत ध्यान कै खोजिया,नहिं तेहि संख्या आहि।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि ईश्वर का रूप अपरंपार और बहुरंगी है, जिसे शब्दों में पूरी तरह बताया नहीं जा सकता। उसे पाने के लिए बहुत ध्यान और खोज करनी पड़ती है, फिर भी उसकी कोई सीमा या संख्या तय नहीं की जा सकती। वह हर जगह है और हर रूप में दिखाई देता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

बच्चों, इस दोहे से हमें सीख मिलती है कि ईश्वर एक ही है पर उसके रूप अनेक हैं। हमें किसी एक रूप या चीज़ में ही भेदभाव नहीं करना चाहिए। सभी में अच्छाई ढूंढो, ध्यान से पढ़ाई और काम करो, और सबका सम्मान करो। सच्ची खोज और मेहनत से ही बड़ी चीज़ें मिलती हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

139

कबीरदास जी के दोहे

इतने तनके साझिया, जन्मों भरि दुख पाय।
चेतत नहीं मुग्ध नर बौरे,मोर मोर गोहराय।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि व्यक्ति जीवन भर 'मेरा-मेरा' (मोर-मोर) कहकर सांसारिक संपत्तियों और रिश्तों को समेटने में लगा रहता है, लेकिन यही मोह उसके जन्मों-जन्मों के दुखों का कारण बनता है। इसके बावजूद, अज्ञानी और मूर्ख मनुष्य होश में नहीं आता तथा ईश्वर या सत्य का स्मरण करने के बजाय जीवन भर सांसारिक चीजों पर अपना अधिकार जताने में ही व्यर्थ व्यस्त रहता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें 'यह मेरा है, वह मेरा है' जैसी स्वार्थ और लालच की भावना से दूर रहना चाहिए। सांसारिक चीजें, जैसे खिलौने या धन, हमेशा हमारे साथ नहीं रहते; इसलिए हमें किसी वस्तु या अहंकार से जुड़ने के बजाय अच्छी आदतों, सच्चाई और दूसरों की मदद करने में अपना ध्यान लगाना चाहिए। सच्चा सुख बांटने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञ रहने में है, न कि केवल चीजें बटोरने में।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

140

कबीरदास जी के दोहे

खाते खाते युग गया, बहुरि न चेतोआय।
कहहिं कबीर पुकारिके,जीव अचेतहिं जाय।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी इस दोहे में सचेत करते हुए कहते हैं कि मनुष्य जीवन भर केवल सांसारिक भोग-विलास, खान-पान और भौतिक सुखों में लीन रहकर अपना पूरा जीवन बिता देता है, लेकिन फिर भी उसके भीतर ईश्वर - भक्ति या आत्म-ज्ञान की चेतना नहीं जगती। कबीर जी जोर देकर चेतावनी देते हैं कि जीवन की इस अनमोलता को न समझते हुए मनुष्य अंततः अज्ञानता और बेसुध अवस्था में ही इस संसार से विदा हो जाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि जीवन का उद्देश्य केवल खाने-पीने और खेलने-कूदने तक सीमित नहीं होना चाहिए। हमें समय रहते अच्छी आदतों, ज्ञान और नैतिक मूल्यों को अपनाना चाहिए। जीवन के हर पल का सही उपयोग करना चाहिए और आलस्य छोड़कर जागरूक बनना चाहिए, ताकि बड़े होकर हम सही और गलत की पहचान कर सकें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

141

कबीरदास जी के दोहे

परदे परदे चलि गई, समुझ परी नहिं बानि।
जो जाने सो वांचि हैं, होत सकल की हानि।।

भावार्थ:-

यह दोहा सत्य और ज्ञान के गूढ़ स्वभाव को दर्शाता है। संसार के नियम और वास्तविक ज्ञान सरलता से समझ में नहीं आते, वे अज्ञानता के परदों (आवरण) के पीछे छिपे रहते हैं। जो व्यक्ति इस रहस्य और सत्य को समझ लेता है, वही जीवन के सच्चे अर्थ को पढ़ और जान पाता है; जबकि इसे न समझ पाने वाले लोग भ्रम में जीकर अपना ही नुकसान (हानि) कर बैठते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि पढ़ाई और जीवन में सफलता पाने के लिए केवल ऊपरी बातें देखना काफी नहीं होता। हमें किसी भी विषय या बात की गहराई में जाकर उसे सही से समझने की कोशिश करनी चाहिए। जो बच्चे मेहनत करके ज्ञान के छिपे हुए अर्थ को समझ लेते हैं, वे ही जीवन में सही रास्ता चुनते हैं और नुकसान से बचते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

142

कबीरदास जी के दोहे

घोरि घोरि बर्षा बरषावै परिया बुंद न पानी।
चींटी के पग हस्ती बांधे छेरी बीगे खायो।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि सच्चे ज्ञान और भक्ति रूपी वर्षा के होते ही मनुष्य के भीतर से अज्ञान मिट जाता है। यहाँ 'चींटी' नम्र जीव-आत्मा और 'हाथी' मन के अहंकार का प्रतीक है; अर्थात् भक्ति के ज्ञान से आत्मा ने मन के विशाल अहंकार को वश में कर लिया है और अज्ञान-वासनाएँ पूरी तरह समाप्त हो गई हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

बच्चों, हमेशा दिखावे पर मत जाओ। जो लोग सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें करते हैं पर काम नहीं करते, उनसे सावधान रहो। सच बोलो, मेहनत करो और जो संभव है वही करो। झूठी बातों और दिखावे से दूर रहकर सच्चाई और मेहनत को अपनाना ही बुद्धिमानी है।

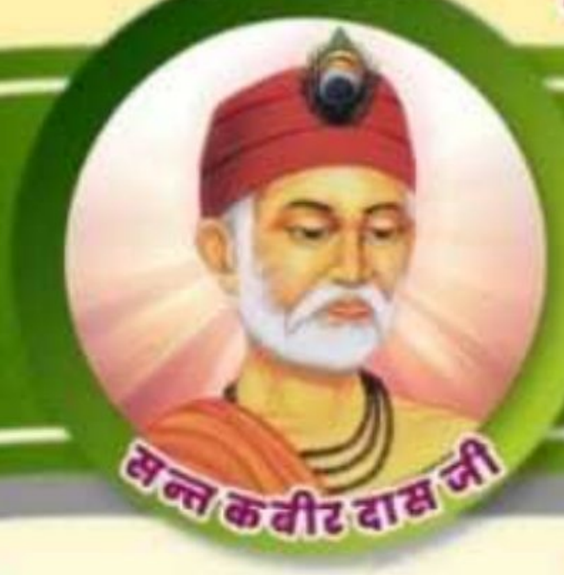
टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

143

कबीरदास जी के दोहे

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि किसी सज्जन या ज्ञानी व्यक्ति की पहचान उसकी जाति या धर्म से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान और विचारों से की जानी चाहिए। जिस प्रकार तलवार की असली उपयोगिता और मूल्य उसकी धार में होता है, न कि उसकी सुंदर म्यान में, ठीक उसी प्रकार मनुष्य का वास्तविक मूल्यांकन उसके बाहरी रूप-रंग या जाति के बजाय उसके आचरण और ज्ञान के आधार पर होना चाहिए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी किसी व्यक्ति को उसके बाहरी रूप-रंग, कपड़ों या जाति-धर्म के आधार पर छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। हमेशा लोगों के अच्छे गुणों, सच्ची विद्या और सद्व्यवहार का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ज्ञान ही जीवन में सबसे बड़ा धन है।

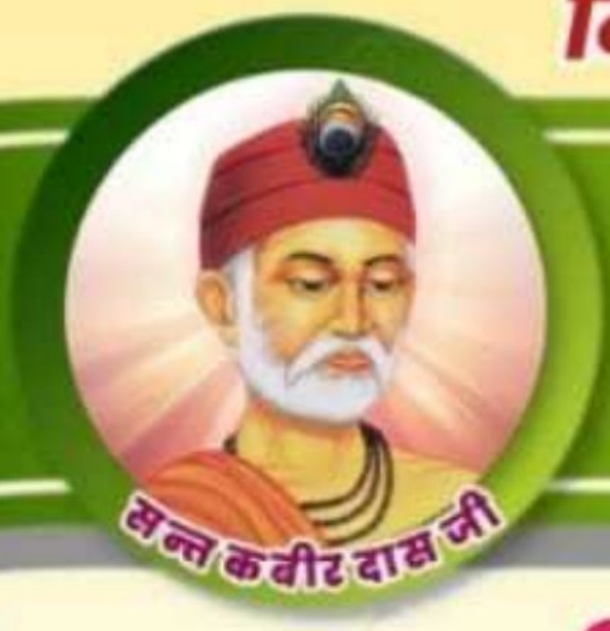
टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

144

कबीरदास जी के दोहे

तिनका कबहुँ ना निन्दिये, जो पाँवन तर होय,
कबहुँ उड़ी आँखिन पड़े, तो पीर घनेरी होय।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि पैर के नीचे दबे छोटे से तिनके को भी तुच्छ या कमजोर समझकर उसकी उपेक्षा या निंदा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि यदि वही छोटा सा तिनका कभी हवा में उड़कर हमारी आँख में चला जाए, तो वह अत्यधिक पीड़ा और कष्ट पहुँचाता है। ठीक इसी प्रकार, समाज में किसी भी गरीब,छोटे या कमजोर व्यक्ति को असहाय मानकर उसका अनादर या अपमान नहीं करना चाहिए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी किसी व्यक्ति को उसकी स्थिति, आकार या रूप देखकर छोटा या कमजोर नहीं समझना चाहिए। हर जीव और मनुष्य का अपना महत्व होता है,इसलिए हमें सभी के साथ आदर, विनम्रता और सम्मान का व्यवहार करना चाहिए। किसी का अनादर करने से भविष्य में हमें ही परेशानी उठानी पड़ सकती है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

145

कबीरदास जी के दोहे

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ॥

भावार्थ:-

यह दोहा समय के सदुपयोग और कार्य को तुरंत पूरा करने का महत्व समझाता है। संत कबीर कहते हैं कि जिस काम को कल पर टाला जा रहा है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और जो आज करना है, उसे इसी समय (अभी) पूरा कर लेना चाहिए। जीवन अनिश्चित है और अगले ही पल क्या हो जाए या कैसी परिस्थिति आ जाए, इसका कोई भरोसा नहीं है। इसलिए यदि समय निकल गया, तो बाद में पछताने के अलावा उस काम को करने का अवसर दोबारा नहीं मिलेगा।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि 'आलस्य हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है'। हमें पढ़ाई, खेल या घर के किसी भी काम को "बाद में करूँगा" कहकर टालना नहीं चाहिए। जो बच्चा अपना समय पर काम पूरा करता है, वही सफलता पाता है और अंत समय के तनाव से बचा रहता है। इसलिए आज का काम आज ही और अभी पूरा करने की आदत डालें।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspost.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

146

कबीरदास जी के दोहे

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

भावार्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि हाथ में माला घुमाते हुए और ईश्वर का नाम जपते हुए कई युग बीत गए, लेकिन इंसान के मन की चंचलता, अहंकार और बुराई दूर नहीं हुई। इसलिए हाथ में पकड़ी हुई मनकों (मोतियों) की माला को फेरना बंद करो और अपने मन की माला को फेरो, अर्थात् अपने मन के विचारों को शुद्ध करो और अपने अंतरात्मा को सुधारो।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों! सच्ची भक्ति और अच्छाई बाहरी दिखावे, पूजा-पाठ या केवल बातें करने में नहीं, बल्कि अपने अच्छे व्यवहार में होती है। हाथ में माला पकड़कर या अच्छी बातें बोलकर यदि मन में दूसरों के प्रति गलत भावनाएं हैं,तो उसका कोई फ़ायदा नहीं है। इसलिए दिखावा करने की बजाय हमेशा अपने मन को साफ़ रखो, दूसरों से मीठा बोलो और सबके प्रति दया व प्रेम का भाव रखो।

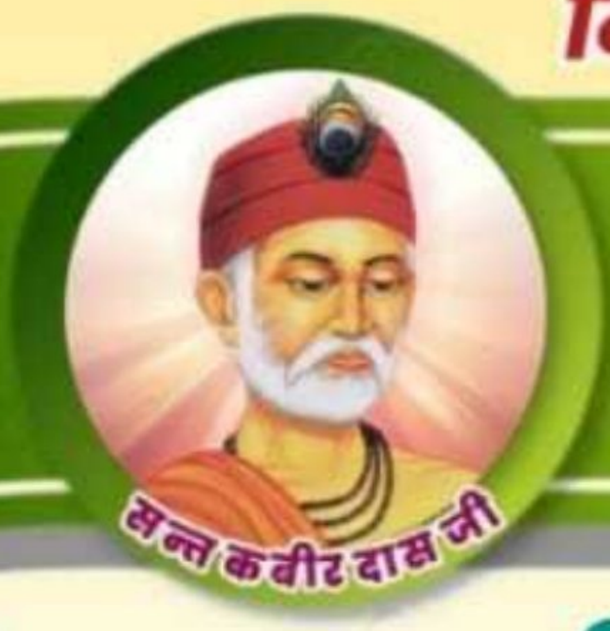
टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

147

कबीरदास जी के दोहे

साईं इतना दीजिये, जामे कुटुंब समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाय ॥

भावार्थ:-

संत कबीर दास जी के इस प्रसिद्ध दोहे में ईश्वर से केवल उतनी ही धन - संपत्ति और संसाधन मांगने की प्रार्थना की गई है, जिससे परिवार का पालन-पोषण सहजता से हो सके। इसमें व्यक्ति की स्वयं की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी होने के साथ-साथ द्वार पर आए किसी भूखे या जरूरतमंद अतिथि का सत्कार करने की क्षमता बनी रहने की कामना है। यह भाव अति-तृष्णा और लोभ का त्याग कर संतोष, सादगी तथा निस्वार्थ सेवा भाव से जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें जीवन में कभी भी लालच नहीं करना चाहिए और जो कुछ हमारे पास है, उसी में संतोष रखना चाहिए। असली खुशी और समृद्धि बहुत सारी वस्तुएं जुटाने में नहीं, बल्कि अपनी ज़रूरतों को सीमित रखकर दूसरों की मदद करने और साझा करने में छिपी है। जब हम अपनी चीज़ों को दूसरों के साथ बांटते हैं, तो समाज में प्रेम, करुणा और सहयोग की भावना बढ़ती है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

148

कबीरदास जी के दोहे

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

भावार्थ:-

संत कबीरदास जी कहते हैं कि जीवन में किसी भी चीज़ की अति (अधिकता) अच्छी नहीं होती। जिस प्रकार ज़रूरत से ज़्यादा बोलना या बिल्कुल चुप रहना दोनों नुकसानदायक हैं, और हद से ज़्यादा बारिश बाढ़ लाती है तो बहुत तेज़ धूप सब कुछ सुखा देती है, उसी तरह किसी भी काम में संतुलन होना ज़रूरी है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हर काम समझदारी और सही सीमा में रहकर करना चाहिए। न तो बहुत ज़्यादा बोलना अच्छा होता है और न ही हमेशा चुप बैठना सही है। पढ़ाई, खेल - कूद, टीवी देखना या बातें करना—हर चीज़ का एक सही समय और दायरा होना चाहिए, क्योंकि जीवन में संतुलन ही हमें सफलता और सही राह दिखाता है।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

149

कबीरदास जी के दोहे

पतिबरता मैली भली गले कांच की पोत ।
सब सखियाँ में यों दिपै ज्यों सूरज की जोत ॥

भावार्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि एक पतिव्रता स्त्री यदि मैली साड़ी पहनकर गले में कांच की माला भी डाल ले, तो वह सभी सखियों में ऐसे चमकती है जैसे सूरज की रोशनी। इसका अर्थ है कि चरित्र, पवित्रता और गुणों से इंसान की असली सुंदरता आती है, न कि महंगे कपड़ों और गहनों से।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

बच्चों, याद रखो कि असली सुंदरता चेहरे और कपड़ों में नहीं होती। ईमानदारी, सच्चाई और अच्छे गुणों से ही इंसान सबके बीच चमकता है। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने चरित्र से सबसे अलग दिखती है, वैसे ही तुम भी अच्छे संस्कार और मेहनत से सबसे अलग और प्यारे बन सकते हो।

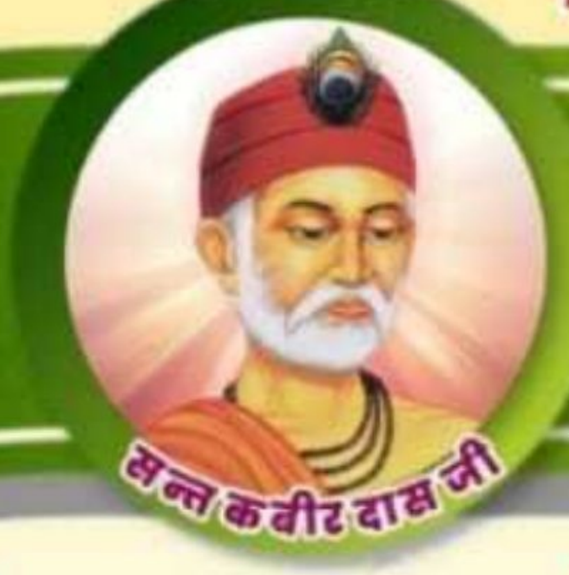
टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद



अमृतवाणी सन्देश

150

कबीरदास जी के दोहे

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

भावार्थ:-

संत कबीर दास जी कहते हैं कि जब मैं इस संसार में दूसरों की बुराइयाँ देखने निकला, तो मुझे कोई भी बुरा व्यक्ति नहीं मिला। परंतु जब मैंने अपने मन और आत्मा में गहराई से झाँक कर देखा, तो पाया कि मुझसे अधिक बुरा और कमियों से भरा कोई अन्य नहीं है। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य का स्वभाव दूसरों में दोष ढूँढने का होता है, जबकि वास्तविक बुराई हमारे अपने अंदर छुपी होती है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें दूसरों की कमियाँ निकालने या उनकी चुगली करने के बजाय हमेशा अपनी गलतियों और व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए। जब हम स्वयं को सुधारने का प्रयास करेंगे, तो हम एक बेहतर इंसान बन सकेंगे और समाज में हमेशा सकारात्मकता फैला सकेंगे।

टीम अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.com 9458278429 https://www.shikshansambad.blogspot.in
https://www.missionshikshansambad.com https://www.facebook.com/shikshansambad/

PDF Image to PDF
Scanned with OKEN Scanner

टीम अमृतवाणी संदेश

श्री मिहिर यादव (स.अ.)
कम्पोजिट विद्यालय कुकुहाँ
ब्लाक - करंजाकला, जनपद - जौनपुर



श्री नरेन्द्र नाथ पटेल (स.अ.)
कम्पोजिट विद्यालय सुरहन
ब्लाक - भदोही, जनपद - भदोही



श्री रविन्द्र कुमार पटेल (स.अ.)
पी.एम.श्री. उच्च प्राथमिक विद्यालय झौवा
ब्लाक - औराई, जनपद - भदोही



मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with OKEN Scanner